क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वाराः योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइलः 9415217277/81
ई-मेलःyogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेलः kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइटः kriyayoga-yogisatyam.org

क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 314 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग ध्यान ऋषि-मुनि में रूपान्तरण का विज्ञान

24 जनवरी 2014 त्रिवेणी रोड पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने दीप प्रज्जवलित करके क्रियायोग शिविर का उद्घाटन किया । कार्यक्रम में भारत तथा अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, गयाना, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए चिकित्सक, इंजीनियर व प्रबुद्ध वर्गों के साथ-साथ तीर्थयात्रियों व कल्पवासियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मानव का रुपान्तरण ऋषि मुनि में हो जाता है। उन्होंने ऋषि शब्द की आध्यात्मिक और तात्विक विवेचना करते हुए स्पष्ट किया कि ऋषि शब्द ऋजु रेखा से बना है। ऋजु रेखा का अभिप्राय सीधी रेखा से है तथा सीधी रेखा असीमता को व्यक्त करती है। इस प्रकार असीमता के मार्ग पर चलना ही ऋषि में रुपान्तरित होना है। स्वामी जी ने आगे कहा कि शास्त्रों में वर्णित सीधी रेखा का अभिप्राय बाहर किसी सीधी रेखा को बनाकर उस पर चलना नहीं है। बाहर अर्थात् बाह्य दृश्य जगत में हम सीधी रेखा नहीं बना सकते हैं क्योंकि पृथ्वी का स्वरुप गोल है। सीधी रेखा बनाने पर भी वह वक्र ही रहती है। पृथ्वी पर अलग-अलग स्थान पर गुरुत्वाकर्षण बल का स्वरुप अलग-अलग है इसलिए सीधी रेखा नही बनाया जा सकता है। स्वामी जी ने आगे स्पष्ट किया कि सीधी रेखा असीमता का संबोधन है।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने विषय पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि शास्त्रों में वर्णित शब्दों व वाक्यों का अर्थ बोलचाल की भाषा से पूर्णतया भिन्न है जिसे केवल क्रियायोग ध्यान की गहनता में प्रवेश करने पर ही जाना जा सकता है। स्वामी जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के अभ्यास द्वारा साधक अतीत-वर्तमान-भविष्य के बीच दूरी की शून्यता का अनुभव कर लेता है। अतीत-वर्तमान-भविष्य के बीच दूरी की शून्यता की अनुभूति करना ही असीमता की अनुभूति है और यही ऋजु रेखा पर चलने की क्रिया है। स्वामी जी ने आगे कहा कि क्रियायोग ध्यान के द्वारा मन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने वाले को मुनि कहते हैं। क्रियायोग कार्यक्रम के दौरान स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने खडे होकर, बैटकर व लेटकर क्रियायोग ध्यान का विधिवत् अभ्यास कराया।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन माघमेला में प्रातः 7:00 बजे से 9:00 बजे तक तथा सायं 2:00 बजे से 3:30 बजे तक तथा 4 से 6 बजे तक बजे तक हिन्दी तथा ॲग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता

क्रियायोग का विश्वव्यापी प्रसार एक ऐसे अखण्डित विश्व का सूत्रपात करेगा जिसके शासक स्वयं परमचैतन्य परमात्मा होंगे । - गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्